Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
July 2024 5(7), 102–113

SOCIAL LIFE OF NORTHEAST INDIA AS DEPICTED IN HINDI FICTION

हिंदी कथा-साहित्य में चित्रित पूर्वोत्तर भारत का सामाजिक जीवन

Pooja Shrivastava [1], Manoj Kumar Singh [2]

[1] Research Student, Hindi Department, Maharishi University of Information Technology, Lucknow
[2] Assistant Professor, Hindi Department, Maharishi University of Information Technology, Lucknow

ABSTRACT

English: The title of this research is 'Social life of Northeast India as depicted in Hindi fiction'. As we know that Indian society is a collection of different communities. This means that this society is made up of many communities. For years, many communities have been living together lovingly and living their lives. In this Indian society, there are some communities or classes which have been neglected, despised, deprived and exploited for years. Among them, 'Adivasis' is an important community. In this study, the social system, social problems etc. of Northeast India have been divided into some points and analyzed. The researcher has found that at present, the study and teaching of the tribal society of the Northeast is being done under different disciplines. Due to which, a lot of information is being obtained about the tribal life-philosophy and values. But as far as Hindi language and literature is concerned, Northeast India has remained forgotten by the writers. It can be said in this way that from the point of view of Hindi literature writing, Northeast India has always been neglected and untouched. Along with this, it is also true that tribal life has been even more absent in Hindi literature writing. While doing research work, it has been found that actually writing about Northeast India has started in the twenty-first century. Tribal life has emerged in these works. In fiction literature, the question of tribal identity and existence of Northeast India has been mainly raised. Along with this, the main concerns and problems of the tribal society of Northeast India have been expressed.

Hindi: प्रस्तुत शोध का शीर्षक ' हिंदी कथा-साहित्य में चित्रित पूर्वोत्तर भारत का सामाजिक जीवन' है । जैसा कि हमें ज्ञात है कि भारतीय समाज विभिन्न समुदायों का समुच्चय है। मतलब कि यह समाज कई समुदायों से मिलकर बना है। वर्षों से यहाँ अनेक समुदाय आपस में प्रेमपूर्वक एक साथ रहते चले आ रहे हैं तथा अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। इसी भारतीय समाज में ऐसे कुछ समुदाय या वर्ग भी हैं जो वर्षों से उपेक्षित, तिरस्कृत, वंचित और शोषित हैं। जिनमें 'आदिवासी' एक महत्त्वपूर्ण समुदाय है । इस अध्ययन में पूर्वोत्तर भारत की समाज व्यवस्था, सामाजिक समस्या आदि को कुछ बिंदुओं में बाँटकर विश्लेषित किया गया है। शोधार्थी ने पाया है कि वर्तमान में पूर्वोत्तर के आदिवासी समाज का अध्ययन- अध्यापन ज्ञान विभिन्न अनुशासनों के अंतर्गत किया जा रहा है । जिसके कारण आदिवासी जीवन-दर्शन और मूल्यबोध की अनेक जानकारियाँ प्राप्त हो रही हैं। किंतु जहाँ तक हिन्दी भाषा और साहित्य का प्रश्न है । वहाँ पूर्वोत्तर भारत लेखकों के लिए विस्मृत-सा रहा है। इस बात को इस ढंग से कहा जा सकता है कि हिन्दी साहित्य लेखन की दृष्टि से पूर्वोत्तर भारत सदा से उपेक्षित एवं अछूता रहा है। इसके साथ यह भी सत्य है कि हिन्दी साहित्य लेखन में आदिवासी जीवन और भी अधिक अनुपस्थित रहा है। शोधकार्य करते हुए पाया गया है कि वास्तविक रूप से इक्कीसवीं सदी में पूर्वोत्तर भारत के विषय में लेखन शुरू हुआ है । इन कार्यों में आदिवासी जीवन उभर कर सामने आया है । कथा साहित्य में पूर्वोत्तर भारत की आदिवासी अस्मिता एवं अस्तित्व के प्रश्न को मुख्य रूप से उठाया गया है। इसके साथ ही पूर्वोत्तर भारत के आदिवासी समाज की मुख्य चिंता और समस्याओं को अभिव्यक्ति मिली है ।

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i7.2024.2007

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

How to cite this article (APA): Shrivastava, P., and Singh, M. K. (2024). Social Life of Northeast India as Depicted in Hindi Fiction. *ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts, 5*(7), 102–113. doi: 10.29121/shodhkosh.v5.i7.2024.2007

1. प्रस्तावना

पूर्वोत्तर के जनजातीय समाज अन्य भारत के जनजातीय समाज से काफ़ी भिन्न हैं । दरअसल पूर्वोत्तर का जनजातीय समाज भारत के अन्य समाज से अलग.थलग रहा है। इनके आपस में जुड़ाव में काफ़ी अंतराल रहा है । अतरू भारत के अन्य समाजों के साथ ये जनजातियाँ सामाजिकए राजनीतिक एवं सांस्कृतिक रूप से नहीं जुड़ पायीं । अंग्रेजों ने भी इनको भारत के अन्य समाजों से अलग रखा । जिस कारण ये भारत के अन्य समाजों के साथ जुड़ने में झिझक एवं संकोच करते रहे हैं । परंतु आज स्थिति थोड़ी बदलती दीख रही है। इसके पीछे कई कारण उत्तरदायी हैं। मसलन कि रोजगारए शिक्षाए व्यापरए शादी.ब्याह आदि के कारण पूर्वोत्तर के लोग अन्य समाजों से जुड़ रहे हैं ।

पूर्वोत्तर भारत जनजातीय जनसंख्या की दृष्टि से समृद्ध रहा है। यहाँ प्रमुख रूप से जनजातीय समुदाय अपना जीवन यापन करते हैं। परंतु असम और त्रिपुरा के संदर्भ में यह बात पूर्णतः सत्य नहीं है । दरअसल असम और त्रिपुरा में स्थिति मिली.जुली दिखाई देती है। यहाँ लगभग पूर्वोत्तर में सौ से अधिक जनजातियाँ एवं उप.जनजातियाँ निवास करती हैं। सभी जनजातियों का समाज एक.दूसरे से भिन्न है । इसलिए उनकी संस्कृति में विविधता लक्षित की जा सकती है । बहुत सारी विविधताओं के बावजूद इनमें कहीं न कहीं एकरूपता भी दिखाई देती है। यह एकरूपता किस रूप में मौजूद है यह विचारणीय प्रश्न है । अगर ऐतिहासिक दृष्टि से विचार करें तो सभी जनजातियों का अपना इतिहास है। इतिहास का अवलोकन करने पर कहना आसान है कि ये सभी एक.दूसरे से संघर्ष करते हुए एवं आपस में एक.दूसरे से सीखते हुए आगे बढ़ रही हैं।ख्1,

2. सामाजिक स्थिति

भारत के विषय में कहा जाता है कि यह देश विविधताओं का देश है। जहाँ पर भिन्न बोलीए भाषाए जातिए धर्म व सम्प्रदाय के लोग रहते हैं। सभी वर्गों की संस्कृति और रहन. सहन अलग हैं द्य भारत की भूमि इन सभी विविधताओं को समेटे हुए सहअस्तित्व की जीवन.शैली को लेकर चल रही है। यहाँ का समाज इतना समावेशी है कि भिन्न.भिन्न समय पर आए बाहरी लोगों को इसने अपने भीतर समायोजित कर लिया । आज यह पहचान करना मुश्किल है कि कौन व्यक्ति शकए हूण या कुषाण आदि आक्रमणकारियों का वंशज है। सभी का खून यहाँ की मिट्टी में रच.बस गया है। इन सब से परे जब हम पूर्वोत्तर के समाज पर दृष्टि डालते हैं तो अलग ही परिदृश्य दिखाई देता है । इस परिदृश्य को देखने लिए समाज निर्माण के तत्त्वों पर संक्षिप्त प्रकाश डालना जरूरी है। दरअसल यही तत्त्व किसी भी समाज को नियंत्रित एवं परिचालित करते हैं।

किसी भी समाज का निर्माण उसमें रहने वाले लोगों से होता है। जिसमें लोग अपनी आवश्यकताओं के लिए एक.दूसरे से सम्पर्क स्थापित करते हैं। समाज के अंतर्गत सुरक्षा का भाव भी निहित होता है। ष्मेकिवर ने समाज की परिभाषा करते हुए इसको संबंधों का ताना.बाना अथवा जाल माना है। समाज में प्रत्यक्ष.अप्रत्यक्ष रूप से व्यक्ति भिन्न.भिन्न संबंधों के आधार पर एक. दूसरे से जुड़े हुए हैं।

समाज लोगों का वह समूह हैए जिसमें लोग एक दूसरे की सहयता करते और लेते हुए जीवन व्यतीत करते हैं। पूर्वोत्तर का समाज कई जाति जनजातियों के मेल से बना है। यहाँ का सामाजिक ढाँचा अन्य जगहों से थोड़ा भिन्न है । यहाँ कुछ ऐसी खुबियाँ हैं जो यहाँ के समाज को विशिष्ट बनाती हैं। इस अध्याय में हम हिंदी कथा . साहित्य में चित्रित पूर्वोत्तर के समाजिक जीवन के विविध पक्षों को विवेचित करने का प्रयास करेंगे। ख्1,

3. सामासिक समाज

पूर्वोत्तर भारत में विभिन्न जाति जनजातियाँ निवास करती हैं। पूर्वोत्तर के स्थानीय निवासियों के अलावा पूर्वोत्तर के बाहर के लोग भी कई पीढ़ियों से पूर्वोत्तर में रह रहे हैं। इनमें से कुछ हमेशा के लिए बस गये हैंए कुछ अपने मूल स्थान से जुड़े हुए हैं। श्आहुतिश् में मणिपुर का चित्रण है। मणिपुर में भी यही

स्थिति है। यहाँ भी उत्तर भारत के लोग आकर बस गये हैं। वे लोग अधिकतर इकट्ठा रहते हैं। उनकी बस्तियाँ भी हैं। ऐसे लोग अपनी मातृभाषा तो बोलते ही हैं साथ ही मणिपुरी भाषा भी एक मणिपुरी व्यक्ति की तरह ही बोलते हैं। मनोज को यह देख कर बहुत आश्चर्य होता है। बस्ती ;बिहारी बस्तीद्ध के लोग आपस में भोजपुरी में बातें करते हैंए पर वे मनिपुरी भाषा के अच्छे जानकार है। स्थानीय निवासियों के साथ वे मनिपुरी में बड़े अधिकार से बातें करते हैं। ख्8,

पूर्वोत्तर के स्थानीय समाजों में बाहरी लोग मिलते हैं। शहरों में इनकी संख्या और अधिक होती है। उत्तर भारत के हिंदी भाषी लोग भी मणिपुर के शहरों के समाज का एक हिस्सा बन गये हैं। पर मणिपुरी समाज का हिस्सा बन जाने पर भी वे अपनी संस्कृति से ही जुड़े हुए हैं. इन लोगों ने ;बिहारी बस्ती के लोगों नेद्ध अपने समाज से अपनी रीति.रिवाजए पूजा.पाठ को नहीं छोड़ा। शादी.ब्याह अभी भी अपनी जातियों में करते हैं। रिश्तों के लिए ये उत्तर पूर्व के अन्य राज्यों में बसे लोगों को ही चुनते हैं बहुत कम लोग अपने मूल स्थान पर जाते हैं। ख्8,

मणिपुरी समाज में दो ही जातियाँ हैं. एक मूल निवासी क्षत्रिय और दूसरे बाहर से आकर मणिपुरी समाज में सम्मिलित होने वाले ब्राह्मण । मूल निवासी मैतेयी अपने रक्त की शुद्धता की चिंता करते हैं और ब्राह्मणों को अपने में सम्मिलित करने के बाद भी उन्हें बाहरी ही मानते हैं। मैतेयी लड़की के साथ ब्राह्मण युवक के विवाह पर अब विरोध होने लगा है। श्आहुतिश् में मनोज के मित्र अध्यापक नवीन शर्मा जो मणिपुरी ब्राह्मण है उनके विवाह के वक्त उनकी प्रेमिका के मैतेयी होने के कारण बहुत विरोध और असुविधाओं का सामना करना पड़ा था । श्आहुतिश् में उपन्यासकार लिखते हैं. मैतेयीए जो अपने को क्षत्रिय मानते हैंए यहाँ के मूल निवासी और अपने कुल की शुद्धता को बनाये रखने में विश्वास करते हैं। ब्राह्मणों को मैतेयी कुनबे में स्वीकार करने के बाद और हिंदू समाज में महत्त्वपूर्ण स्थान देने के बाद भी उन्हें श्आउटसाइडरश् मानते हैं । ख्8,

आगे श्आहुतिश् में इस बात को और अधिक स्पष्ट करते हुए कहा गया है. शादी के इच्छुक लड़के और लड़की दोनों को मैतेथी होना चाहिएए उनमें कोई अगर ब्राह्मण कुल का है तो वह भी स्वीकार नहीं। ख्8,

श्आहुतिश् उपन्यास में मनोज अपने गाँव जाता है। वह मणिपुर के समाज की विशेषताएँ अपने साथियों को बताता है। निम्नलिखित पंक्तियों में मणिपुर के समाज के ढाँचे पर अच्छा प्रकाश डाला गया है. मनोज ने बताया किस तरह का वहाँ का समाज हैए वहाँ जाति के आधार पर लोग नहीं बँटे हैं। लड़के.लड़कियों में भी कोई अंतर नहीं है। छुआछूत या जातिप्रथा जैसे प्रचलन नहीं है। सभी समान रूप से शिक्षा लेते हैंए उनके रहन.सहन को देखकर अमीर.गरीब का अंतर मालूम नहीं होता। शादी में दहेज की बंदिश नहीं हैए लड़का.लड़की अपने मन से शादी करते हैं। ख्8,

श्आहुतिश् में मणिपुर के विवाह संबंधी प्रसिद्ध प्रथा का उल्लेख कई बार हुआ है। एक जगह पर मनोज के मन में चल रही बात का उल्लेख है. मनिपुर में जातिप्रथा नहीं है। समाज में शादी की प्रथा कितनी अच्छी हैए लड़के.लड़कियाँ एक.दूसरे को चुन लेते हैं। हिंदू होने पर भी अपनी परम्परागत प्रणाली को चलाये रखा है। कोई भी लड़का गरीब हो या अमीरए लड़की को लेकर भाग जाता है। दोनों जब तक एक. दूसरे को चाहते हैंए कोई उन्हें रोक नहीं सकता । ख्8,

अक्सर जैसा कि पहले होता था कोई राजा किसी दूसरे राजा की सहायता के बदले अपनी पुत्री उस राजा को देता थाए श्जंगली फूलश् में भी ऐसा ही प्रसंग आया है। खूंखार ताप नामक भारी.भरकम बदसूरत व्यक्ति को मारने के पुरस्कार स्वरूप मैकार. मैरांग कबीले के सरदार ने अपनी पुत्री आसीन का विवाह तानी से करा दिया। ख्11,

श्मुक्तावतीश् में मणिपुरी समाज की सभी को अपने में समा लेने की विशेषता का उल्लेख उपन्यास का नायक चंद्रावत करता है. यही तो विशेषता है मणिपुरी समाज कीए कि वह किसी भी व्यक्ति को सदा के लिए अपने में घुला मिला लेता है बशर्ते कि वह व्यक्ति भी इसमें हृदय से घुल.मिल जाय। मणिपुर का सारा हिंदू समाज आखिर अनेक जातियों और रक्तों के सम्मिश्रण का ही तो परिणाम हैघ् ख्3,

राजतंत्र में राजा सर्वस्व होता है। उसको सभी सुविधाएँ सुलभ होती हैं। उसे अपनी जीविका के लिए अलग से कुछ करने की आवश्यकता नहीं होती। परंतु खासी समाज का ढाँचा कुछ इस प्रकार का था कि राजा.रानी को भी अपनी जीविका के लिए खेतों में काम करना पड़ता था । श्रूपतिल्ली की कथाश् में

समतावादी खासी समाज का चित्र खींचा गया है. खसिया समाज में इतनी समता बनी हुई थी कि राजा.रानी को भी अपने बसर के लिए अपने खेतों पर अपने हाथों से काम करना पड़ता था। उसमें जो दूसरे लोग सहयोग करते थेए वे नौकर या मजदूर की हैसियत से नहींए सहयोगी की हैसियत से उसमें अपेक्षा रहती थी कि सियेम भी मौका आने पर उनके साथ सहयोग करेगा। चूँकि राजा सबके खेतों में जा.जाकर गुड़ाईए निराईए बुआईए कटाई नहीं कर सकता था अकेले होने के कारण शारीरिक रूप से सम्भव नहीं था इसलिए सबके सहयोग की वापसी वह गाँव की रक्षा के रूप में करता थाए वह भी नेतृत्व देकरए अन्यथा रक्षा तो सभी अपनी कौम की सामूहिक रूप से करते थे। ख्9,

बड़े.बड़े शहरों में बिना कीमत के एक दूसरे के काम में सहायता करना कम देखा जाता है । पर हमारे गाँव आज भी साहचर्य की भावना से परिचालित हैं। श्मिनामश् उपन्यास में मोदी गाँव के लोग एक दूसरे के काम में सहायता करते हुए साहचर्यपूर्ण सामूहिक जीवन का दृष्टांत प्रस्तुत करते हैं । उपन्यासकार ने उल्लेख किया है. गाँव की महिलाओं में एक बहुत ही अच्छी बात यह देखी गई कि वे एक.दूसरे की काफी मदद करती हैं। श्रिगे एनामश् के तहत वे सब मिलकर आज एक के खेत में तो कल दूसरे के खेत में काम करती हैं। इस प्रकार वे हँसी.मजाक भी करती रहती है और खेती का कार्य आराम से हो जाता है। ख्13,

4. स्त्री की स्वतंत्रता एवं शोषण

पूर्वोत्तर में सामाजिक व्यवस्था कुछ ऐसी है कि स्त्रियों का यहाँ पर आमतौर पर बहुत सम्मान और रूतबा होता है । विवाह के मामले में भी स्त्रियाँ यहाँ अपेक्षाकृत रूप में अधिक स्वतंत्र होती हैं। यहाँ स्त्रियों के पास अपना वर चुनने की अपेक्षाकृत अधिक स्वतंत्रता होती है। श्आहुतिश् में मणिपुरी लड़कियों की स्वतंत्रता और विवाह के समय इच्छित वर से विवाह के अधिकार से उपन्यास का नायक बहुत प्रभावित होता है। वह अपने प्रदेश में अपनी जाति के विवाह में लड़कियों की परतंत्रता से मणिपुर की इस मामले में स्त्रियों की स्वतंत्रता की तुलना करता है। मनोज को मणिपुर की लड़कियों के विवाह के मामले में इतनी स्वतंत्रता कैसी लगती है इस पर उपन्यासकार ने टिप्पणी की है. मणिपुर में शादी में लड़कियों को अपने मनोनुकूल लड़का चुनने की परम्परा से मनोज बहुत प्रभावित हुआ। ख्8,

मणिपुर में शादी के लिए अपने मन पसंद लड़के के साथ भाग जाने की प्रथा भी मणिपुर में स्त्रियों की स्वतंत्रता का प्रमाण है । प्रथा यह सूचित करता है कि मणिपुर में लड़की को अपना मन पसंद वर चुनने की स्वतंत्रता है । पर इस प्रथा का एक दोष भी है। इसका उल्लेख उपन्यासकार ने निम्न प्रकार से किया है. लड़का.लड़की के भाग जाने के बाद शादी होनी ही हैए अगर किसी वजह से शादी न हो पाए तो उस लड़की की किसी ढंग से शादी नहीं हो पाती। इसी तरह अगर जबरदस्ती किसी लड़की का अपहरण हो गया तो उसकी नियति है कि उस व्यक्ति को ही वह अपना पति स्वीकार कर लेए अन्यथा उसका समाज में कहीं कोई स्थान नहीं है। ख्8,

श्मुक्तावतीश् में मणिपुर को नारी प्रधान देश कहा गया है। मणिपुर में श्लक्ष्मी बाजारश् और श्ईमा बाजारश् हैं जो पूरी तरह से स्त्रियाँ ही चलाती हैं। यह मणिपुर में स्त्री की स्वतंत्रता और रूतबे का प्रमाण है। श्मुक्तावतीश् में चंद्रावत शैलेंद्र से कहता है. मणिपुर नारी प्रधान देश है भइया । यहाँ की नारी शक्ति पुरुषों से पीछे रह कर हार स्वीकार नहीं कर सकती। ख्3,

स्त्री का शोषणा सदियों से चला आ रहा है। स्त्री को शोषण के इस नर्क से निकालना है तो स्त्रियों को शिक्षा द्वारा सबल तो बनना ही होगा । साथ ही समाज की मानसिकता को बदलने की आवश्यकता है । स्त्रियों के शोषण में प्रमुख है उनका यौन शोषण किसी गाँवए कस्बे या शहर में अपनी आर्थिक शक्ति का फायदा उठाकर स्त्रियों का निरंतर यौन शोषण करने के कई उदाहरण साहित्य और समाज में देखने.सुनने को मिल जाते हैं । श्जहाँ बाँस फूलते हैं में उल्लेख आता है कि साइलो ने न जाने कितनी विवाहिताओंए कुमारियों के साथ संबंध बनाये हैं। यह अपने रसूख के बल पर किसी का व्यभिचार करने का उदाहरण है.

साइलो ने हमारी जाने कितनी विवाहिताओंए कुमारियों को गाभिन किया तो पंचायत नहीं बैठी और इसकी बीवी गाभिन हो गई तो पंचायत बैठी है। ख्9,

श्जहाँ बॉस फूलते हैंश् में जोरमी का प्रेमी झा गर्भवती जोरमी के गर्भ के संतान को अपना मानने से इंकार कर देता हैए जबकि उसका जोरमी के साथ यौन संबंध था। झा के मुकर जाने के कारण ही जोरमी

को दयनीय जीवन जीना पड़ता है। गाँव के लोग कहते भी हैं कि अवैध बच्चे को वे ईश्वर का बच्चा मानकर पालते हैं। केवल झा को स्वीकार करना है कि बच्चा उसका है। अन्यथा जोरमी को गाँव से बाहर निकाल दिया जायेगा। पर झा नहीं मानता। इसके बाद जोरमी का जीवन बहुत दु:खदायी हो जाता है। सभी उसे चरित्रहीनए वेश्या आदि कहते हैं। वह साइकिया से दु:खी होकर कहती है. सभी मुझे रंडी कहते हैं। ख्9,

श्जंगली फूलश् में भी स्त्री के शोषण का वर्णन आता है। नीचे जो उद्धरण दिया जा रहा है वह उपन्यासकार की अपनी टिप्पणी हैए पात्रों के संवाद या सोच नहीं है। यदि उपन्यासकार पात्रों के संवाद में या सोच के रूप में यह बात लिखता तो इसमें यह अस्वाभाविकता आ जाती कि प्रागैतिहासिक समाज में कोई पात्र आधुनिक व्यक्ति की तरह स्त्री शोषण की बात कैसे सोच सकता है. किसी समय उसकी भी एक पत्नी हुआ करती थी। सुंदर और जवान मेहनती और मुँहफट । बच्चे नहीं हुए। लोग कहते थे वह बाँझ है। दिन रात मेहनत करती लेकिन पति के प्रेम की अधिकारी कभी नहीं रही। रहती भी कैसेघ् दासी थी। युद्ध से जीतकर लाई गई थी। उसके शरीर का काम सिर्फ पति के शारीरिक प्यास को ही बुझाने का होता था। ख्11,

श्मिनामश् में यामी को उसकी माँ महिलाओं के मासिक धर्म के समय की अपवित्रता की समस्या के संबंध में बताती है कि कैसे मासिक धर्म के दिनों में पुरुषों के द्वारा इस्तेमाल की गई चीजों को छूने से असुविधाएँ उत्पन्न होती है. आने ने यह भी बताया कि मासिक धर्म होने के बाद से लड़कियों का इस कोब ;सीडीद्ध से उठना निषेध है। आमतौर पर घर के मर्द नदी और जंगलों में शिकार खेलने जाते हैंए अगर लड़की मासिक धर्म के बाद या मासिक धर्म के दौरान मर्दोंवाला स्थान या चीजों का प्रयोग करते हैं वह उन मर्दों को शम्माश् हो जाता है अर्थात् वे शिकार पाने में नाकामयाब हो जाते हैं। यही नहीं वे श्केबाश् यानी किसी मसले के लिए किए गए सभा आदि में अपना पक्ष नहीं रख पाते या बात नहीं कर पाते हैं। ख्13,

अगर स्त्री साहसी हैए अपने हक के लिए लड़ती है तो समाज उससे डरता है। ऐसी हिम्मती स्त्री को समाज के लिए हानिकारक माना जाता है। मिनाम की माँ जमीन को लेकर किये केस को जीतने की पूरी कोशिश करती है। वह हार मानने का नाम नहीं लेती। उनकी जमीने बिक जाती हैए पर मिनाम की माँ अपने पक्ष को सही साबित करने को लड़ती रहती है। इस पर समाज कहता है. एक औरत में इतनी हिम्मतए ऐसी औरत समाज के लिए ठीक नहीं है। ख्13,

एक अकेली स्त्री मानो समाज के मर्दों के लिए आसान शिकार है। अगर स्त्री पुरुष के साथ नहीं है तो उस पर हर पुरुष अधिकार कर सकता है। मिनाम का रिश्ते का चाचा रात को ग्यारह बजे मैसेज भेजता है कि उसके पास रात गुजारने को जगह नहीं है। वह अकेली मिनाम के साथ रात गुजारना चाहता है। इस पर मिनाम लाचारी में कहती है. इस बात पर हँसुए रोऊँ या गुस्सा करूँ। ख्13,

स्त्री से सम्बंधित ऐसे नियम और मानसिकता है समाज में कि स्त्री को फूंक.फूंक कर कदम रखने पड़ते हैं। यदि उसके साथ कोई भी ऊँच.नीच हो जाती है तो उसका जीवन बहुत मुश्किल हो जाता है। स्त्री का पुलिस की हिरासत में जाना भी उसके लिए एक ऐसा ही कलंक है जिसके बाद उसके जीवन में कुछ भी आसान नहीं रह जाता। श्ब्रह्मपुत्रश् उपन्यास में देवकांत को फरार कराने के इल्जाम में धर्मानंदी और उसकी बेटी आरती को पुलिस गिरफ्तार कर लेती है। कुछ दिन बाद दोनों छूट आते हैं। पाँच दिन थाने में रह आने के कारण अब आरती का विवाह कही नहीं होगा। यह कलंक धुल नहीं सकता। उपन्यासकार कहते हैं. अब यह कलंक जीवन पर्यंत नहीं धुल सकता था। कोई.कोई तो यहाँ तक कहता सुना गया था अब आरती का विवाह भी नहीं हो सकेगाए गंदा अंडा कौन लेगाघ् ख्25,

स्त्री को अपने से नीचा मानना पुरुषों की मानसिकता है। श्मुक्तावतीश् उपन्यास में मुक्तावती का घर छोड़कर चंद्रावत के घर चले जाने का जब मुक्तावती की माँ समर्थन करती हैए तब उसके पिता मुक्तावती की माँ को घर से निकाल देने को उद्यत होता है। अगर मुक्तावती को बालों से पकड़ कर वह महाराज के सामने पेश करती है और खुद भी धर्मशास्त्र के विधान के अनुसार प्रायश्चित करती है तभी घर में रह सकती है । मुक्तावती का पिता कहता है. इस घर में रहना चाहती हैए तो जा अभी इसी दम अपनी पापिन बेटी के बाल पकड़े ले जाकर महाराज साहेब के सामने हाजिर कर उनसे क्षमा की भीख माँग और तब दोनों माँ. बेटी धर्मशास्त्र के विधान के अनुसार प्रायश्चित करके इस घर में कदम रखो। समझी। ख्3,

दुनिया के सारे धर्म स्त्री के खिलाफ हैं । वे स्त्री पर अपना कब्जा बनाए रखना चाहते हैं । इसलिए धर्मशास्त्र कहते हैं स्त्री नरक का द्वार हैए स्त्री महाठगिनी है। परम्परावादी धारणा है कि जब स्त्री कुमारी हो

तब उसके शरीर की रक्षा पिता करे। युवती हो तब पति और वृद्धा हो तब पुत्र । यह स्त्री को पुरुष के नीचे रखने का और उसकी स्वतंत्रता छीनने का षड्यंत्र है। श्मुक्तिश् में कियांग्माइची की माँ कहती है. क्रिश्चियन धर्म की बात क्या करेंघ् जिस धर्म ने सारी दुनिया में यही शोर मचा रखा है कि उसके संस्थापक क्राइस्ट का जन्म एक अविवाहित कुमारी कन्या के गर्भ से हुआ। वह स्त्री की कितनी इज्जत फैला रहा है यह तो कोई भी सोच सकता है। ख्6,

स्त्री को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करना है तो उसको शिक्षित बनाना होगा। एक घर को सही से चलाने में स्त्री का ही हाथ होता है। अगर स्त्री शिक्षित है तो इस काम में उसकी कुशलता बढ़ जाती है। इतना ही नहीं एक समाज को भी अगर बेहतर बनाना है तो हमारे समाज का आधा हिस्सा अर्थात् स्त्री को शिक्षित करना अत्यंत आवश्यक है। अगर स्त्री शिक्षित नहीं होगी तो वह अपने घर को सम्भालने मेंए बच्चों को शिक्षित करने मेंए उनकी सही से परवरिश करने में असमर्थ होगी। पर यह बात लड़कियों के माँ.बाप नहीं समझते। अब स्त्री शिक्षा पर जोर दिया जा रहा है। पर आज भी अधिकांश लोगों की मानसिकता यह है कि लड़कियों को पढ़ा.लिखा कर क्या होगाए उन्हें तो एक दिन घर छोड़ कर जाना ही है। सम्भवत यदि लड़कियाँ विवाह के बाद घर छोड़ कर ससुराल न जाती तो माता.पिता लड़कों की भाँति लड़कियों को भी शिक्षित करने में आग्रही होते । माँ जो खुद एक स्त्री है वह भी अपनी लड़की को पढ़ाना नहीं चाहती। लोगों की मानसिकता है कि लड़कियों को तो चूल्हा.चौका ही करना हैए इसके लिए पढ़ने.लिखने की क्या आवश्यकता है। एक लड़का शिक्षा ग्रहण करता है तो वह खुद शिक्षित होता है। पर एक लड़की शिक्षा ग्रहण करती है तो वह पूरे घर को शिक्षित करती है।

5. बलात्कार और वैश्यावृत्ति

स्त्री का बलात्कार उसका चरम यौन शोषण है। इससे स्त्री की आत्मा पर गहरी चोट लगती है। यह एक अति घृणनीय अपराध है। हत्या से तो एक बार प्राण चले जाते हैंए पर बलात्कार से स्त्री हर दिन मरती है। इस घटना की शिकार स्त्री को समाज ग्रहण नहीं करता । पुरुष का अपनी शारीरिक शक्तिए सामाजिक रुतबाए आर्थिक बल के द्वारा यह स्त्री पर किया गया घोर अपराध है। इसके लिए मृत्यु दण्ड भी कम है। पर हमारे समाज में कितने ही ऐसे अपराधी साफ बच जाते हैंए क्योंकि अपनी इज्जत जाने के डर से पीड़ित के परिवार जन इसकी पुलिस में रिपोर्ट नहीं लिखाते और यदि साहस करके न्याय की तलाश में रिपोर्ट लिखा भी देते हैं तो अपराधी अपनी राजानीतिकए आर्थिक शक्ति का फायदा उठाकर बच निकलते हैं। ऐसे अपराध को रोकने के लिए समाज की मानसिकता बदलने की आवश्यकता है। कानून व्यवस्था को मजबूत करने की भी जरूरत है।

श्रूपतिल्ली की कथाश् में राली के जयंती पर बलात्कार की घटना का चित्रण है. घोड़ा रोककर राली उसे ;जयंती कोद्ध कुछ देर तक देखता रहा। फिर घोड़े से उत्तर झट उसके पास गया और तुरंत ही पत्थर पर उसे उकड़ू कर दोनों पाँव नीचे की तरफ खींच दिया। फिर दबोचकर उसके कुल्हे पर बैठ गया ख्9,

श्उफ़्फ़श् में भी बलात्कार का प्रयत्न करते हुए दिखाया गया है। अम्लान डीसी मित्तल की पत्नी रंजना के साथ बलात्कार करने का प्रयास करता है। पहले वह मित्तल की शराब में नींद की गोली मिला देता है। जब मित्तल सो जाते हैंए तब अम्लान रंजना के साथ बलात्कार का प्रयास करता है। पर रंजना चीखती नहींए उसे डर है कि अम्लान उनके बच्चों को या उससे अपेक्षाकृत कमजोर पति को नुकसान न पहुँचा दे. चीखने से भी तोण्ण्ण् कितनी लाज लगेगी दूसरे सुनेंगे तो बेचारे सुनील मुश्किल में पड़ जाएँगे। ताकतबर भी तो है उनसे कहीं बच्चों को कुछण्ण्ण् वह महसूस करता हैए प्रतिरोध दम तोड़ रहा था बाँहों में बँधी औरत का जोर से मसल दी हैं छातियाँ ख्4,

रंजना रोने लगती है और कहती है कि इसके बाद वह जी नहीं पायेगी । अम्लान उसे छोड़ देता है। इसके बाद रंजना पति को बताती है कि अम्लान ने उसके साथ बलात्कार की कोशिश की थी। सुनील मित्तल इस बात से हैरान है कि इतने दिनों तक रंजना ने क्यों नहीं बताया । श्जहाँ बाँस फूलते हैंश् में अक्सर चुप रहने वाला बूढ़ा जोरमी के साथ बलात्कार करता है। एक पितृतुल्य बुजुर्ग से जोरमी को ऐसी उम्मीद नहीं थी। पर काम की प्यास अपनी उम्र नहीं देखती। इसकी सजा कठोर होनी चाहिए। पर बूढ़े को सजा नहीं मिली। जोरमी ने किसी से इसकी शिकायत भी नहीं की। इस घटना को झा देख लेता है और सम्भवतरू इसी कारण वह जोरमी के गर्भस्थ संतान को अपना नाम देने से मुकर जाता है। इसके बाद जोरमी की

जिंदगी नरक बन जाती है. बिना उसकी बात का जवाब दिए बड़े ने जोरमी कि बाँहों में भर जू ;एक प्रकार की शराबद्ध से तरए पर काम से प्यासे अपने सफेद होंठों को उसकी बाई कनपटी पर रख दिया।ण्ण्ण्श् जोरमी ! मेरी पत्नी नहीं है न ।श्ण्ण्ण् गुस्से में श्कर्षियाश् ;जानती हूँद्ध कहती हुई उसकी जकड़ से छूटने के लिए जमीन पर बैठ जाने के लिए झुकी। पर संतुलन न पाने के कारण उसकी कमर बेंच से टकरा गई और वह चीखती हुई बोलीए श्कपूए आपसे ऐसी उम्मीद न थी ।श् पर बूढ़ा इसी क्षण उस पर चढ़ बैठा तो वह उसकी फुर्ती व ताकत पर आँखें फाड़े रह गई। ख्9,

6. प्रेम एवं विवाह

मैं भी अपने ढंग से उनकी सेवा करती थीए पर कभी.कभी उनका तेवर बदल जाता और मेरे लिए अपशब्दों का प्रयोग भी करने लग जाती थी। ख्13,

प्रेम बहुत ही पवित्र अनुभूति है। प्रेम के अलग.अलग रूप है। परिवार जनों से प्रेमए अपने संगी से

प्रेमए जानवरों से प्रेमए ईश्वर से प्रेम आदि। युवक.युवती प्रेम में कभी तो ईमानदार रहते हैंए वे पूरी जिंदगी साथ रहते हैं। पर कभी.कभी प्रेम संबंध में एक साथी दूसरे को धोखा भी देता है। श्मिनामश् में यामी की सहेली आजा अपने प्रेमी की धोखेबाजी की बात बताते हुए यामी को एक पत्र लिखती है। आजा का प्रेमी उससे शादी करने का वादा कर चुका था। पर बाद में एक दूसरी युवती आजा को बताती है कि आजा का प्रेमी और वह शादी करने वाले हैं. मेरे संघर्ष के दौरान मुझे एक लड़का मिला। वो मेरा बहुत खयाल रखता थाए हम धीरे.धीरे पास आ गए। हम शादी करने वाले थे।ण्ण्ण् कुछ दिन पहले मैं उससे मिलने गई तो देखा कि उसके कमरे में एक लड़की बैठी हुई है। जब में पहुँची तो मेरा परिचय मौसी की बेटी कहकर कराया। मैं वहाँ से निकल आयी उस लड़की ने मुझे बताया कि वे शादी करने वाले हैं। मैं टूट गई। ख्13,

मिनाम अपने पहले प्रेम प्रस्ताव के बारे में बताती है कि एक लड़के ने पहले तो उससे कहा कि उसे मिनाम के गाँव की किसी लड़की से प्यार हो गया हैए वह मिनाम की करीबी है। मिनाम ने सोचा कि उसकी एक रिश्ते की भतीजी के बारे में कह रहा है। पर अगले दिन मिनाम को उस लड़के का एक पत्र मिला कि कल वाली बात मिनाम के लिए कहा गया था।

श्मिनामश् में ताकोप नामक एक अनाथ लड़के का वर्णन आता है। ताकोप की माँ यासी को ताकोप के पिता तामार ने प्रेम की आड़ में गर्भवती कर दिया था और जब वह छः महीने की गर्भवती यासी को अपने घर ले आया तो यासी को यह पता चला कि तामार की पहले से ही बीवी और दो बेटियाँ हैं। मिनाम को स्कूल में कई लड़कों ने प्रेम पत्र भेजा। इससे मिनाम को लगने लगा कि शायद वह खुबसूरत है । वह प्रस्तावों को ठुकराती रही। पर आखिर में उसे एक लड़का पसंद आया जो उसी की तरह हॉस्टल का मॉनिटर था। इस प्रसंग में मिनाम कहती है. शायद अंग्रेजी कहावत श्रियेरस्ट इज डियरेस्टश् वाली बात थी। ख्13,

प्रेम उन लोगों में ज्यादा पनपता है जो समान स्वभावए स्तर के होते हैं । उपन्यासकार का भी यही

मानना है। यदि हमारा प्रेम पात्र हमारी छोटी.छोटी बातों का खयाल रखता हैए हमारी छोटी.बड़ी मुसीबत में हमारा साथ देता है तो प्रेम बढ़ जाता है। एक बार मिनाम के आँख के नीचे छोटी सी चोट लगी। जब उसके प्रेमी ने उस छोटी सी चोट को देखा तो उसे फिक्र हुई और वह जिज्ञासा करने लगा कि श्क्या हुआश्। यह जिज्ञासा मिनाम को बहुत अच्छी लगी. मुझे बहुत अच्छा लगा। आज तक किसी ने भी मेरी ओर इस तरह ध्यान नहीं दिया। यह मामूली.सा निशाना उसे दिख गया और वह इससे परेशान हो गया। इस एहसास से ही मैं भाव.विभोर हो उठी। ख्13,

श्रूपतिल्ली की कथाश् में परकीया प्रेम का एक और उदाहरण है। रिंजा की पत्नी अल्खा का बसंता के साथ परकीया प्रेम संबंध है। रिंजा जब अंग्रेजों से लड़ता हुआ कई महीनों के बाद गाँव पहुँचा है तो देखता है। कि वह तो बेटा छोड़कर गया थाए पर अब एक बेटी भी है। अल्खा कह देती है कि यह बसंता की संतान है. वह बसंता की संतति है। मैं तुमसे प्यार जरूर करती हूँए लेकिन शरीर का धर्म है। रहा नहीं गया। परिणाम तुम्हारे सामने है। ख्9,

श्उफ़्फ़श् में मुख्यमंत्री दिव्य बरफूकन और एसपी अद्वैत रंजन की पत्नी अक्षरा के बीच परकीया प्रेम संबंध है । इतने बड़े व्यक्ति का इस प्रकार के रिश्ते से जुड़े रहना बदनामी की सुर्ख़ियों का कारण हो सकता

है । इसी बात को व्यक्त करते हुए अक्षरा की सहेली एंजेला दिव्य बरफूकन को आगाह करती है. यू हैव सक्सिडेडए मिण् दिव्यए पर मुझे डर हैए किसी गंदे स्कैंडल की सुर्खियाँ बन कर ही नहीं रह जाए यह सब ख्4,

7. शिक्षा

शिक्षा का महत्त्व कोई नकार नहीं सकता। शिक्षा के द्वारा ही हम अपना जीवन बेहतर तरीके से जी सकते हैं। अपना भला.बुरा समझने के लिए शिक्षित होना बहुत जरूरी है । अंधविश्वासों से दूर रहने और आधुनिक जमाने के साथ चलने के लिए शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षा के साथ हमारे शिक्षकों का अभिन्न संबंध रहता है। शिक्षक ही हमें शिक्षा देते हैं और किसी काबिल बनाते हैं। पर मनुष्य स्वभाव से ही सुविधाभोगी होता है। जो सुविधाएँ शहरों में प्राप्त हो सकती हैंए वह गाँवों में प्राप्त नहीं होती । यही कारण है कि गाँवों में नियुक्त बहुसंख्यक शिक्षक अपने कर्त्तव्यों का सही से पालन नहीं करते । श्मिनामश् में यामी की सहेली आजा ऐसे ही शिक्षकों की समस्या की ओर इशारा करते हुए कहती है. राज्य सरकार ने लगभग हर गाँव में शिक्षा का प्रबंध कर रखा है। पर दूर.दराज इलाकों में जिस किसी की शिक्षक को भेजते हैंए वो वहाँ रहता नहीं सरकार से वेतन तो लेते है पर काम नहीं करते हैं। ख्13,

यामी अपने ही गाँव मोदी गाँव में शिक्षिका बन कर आती है। उसके अलावा जो शिक्षक वहाँ नियुक्त थाए वह बच्चों को पढ़ाता नहीं था। जब यामी उनसे मिलने गई तो वे बोले कि यामी को अपनी पढ़ाई पर ध्यान देना चाहिए। गाँव के बच्चे कहाँ स्कूल आते हैं। तब यामी उनसे सवाल करती है. आपने कोशिश कीघ् सरकार ने आपको क्यों रखा हैघ् आपके हर दिन ताश खेलने बैठने से बच्चे कैसे स्कूल आयेंगेघ् ख्13,

अपने कर्त्तव्य के प्रति यामी में निष्ठा है और इसी वजह से वह इस प्रकार किसी सीनियर से सवाल पूछती है। शिक्षा.दीक्षा समाज को बेहतर बनाता है। शिक्षित व्यक्ति और समाज को गढ़ने में अहम भूमिका निभाते हैं। अपनी प्रांतीय भाषा ही प्रांत को अभिव्यक्त करने का माध्यम हो सकता है। पर अंग्रेजी भाषा का इतना आतंक छाया हुआ है कि जो अंग्रेजी नहीं जानता वह शिक्षित ही नहीं माना जाता । अंग्रेजी सीखना गलत नहीं है। पर अपनी मातृभाषा को न समझ पाना कितना अधिक लज्जाजनक है यही बताने की जरूरत नहीं है। यदि इस असमर्थता में गर्व का भाव भी मिला हो तो लज्जा की कोई सीमा नहीं रहती । श्जय आइ असमश् में उपन्यासकार ने टिप्पणी की है किस प्रकार असम के एकांश लोग अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय में पढ़ाकर आनंदित हैं और साथ ही अपने बच्चों की असमीया भाषा बोलने की असमर्थता को गर्व के साथ सुनाते हैं । उपन्यासकार का सवाल है कि ऐसे लोगों द्वारा असमीया भाषा सभ्यता.संस्कृति का क्या विकास होगा. विश्वविद्यालय में असमीया माध्यम हुआ लेकिनए आज कितने लोग असमीया माध्यम अपनाते हैंघ् इधर अंगरेजी स्कूलों की बाढ़ आयी हुई है। हर असमीया आज अपने बच्चे को कान्वेटों में प्रवेश दिलाकर गर्वित होता हैए श्बच्चे अपनी मातृभाषा असमिया नहीं समझ पातेश्ए कहने में उनकी छाती फूल उठती है। श्दूसरे लोग असमिया पढेए हम असमिया छोड़ेश्ए यही भाव जिनके मन में हैए उनसे जातिए भाषा संस्कृति की प्रगति से क्या आशा की जा सकती है। ख्15,

स्वतंत्रता के पूर्व असम के युवक उच्च शिक्षा के लिए कोलकाता ही जाते थे। कॉटन कॉलेज 1901 ईण् में स्थापित हुआ था । पहले यह कलकत्ता विश्वविद्यालय के अंतर्गत था । फिर जब 1948 ईण् में गौहाटी विश्वविद्यालय स्थापित हुआए तब यह गौहाटी विश्वविद्यालय के अंतर्गत हुआ । श्ब्रह्मपुत्रश् में देवकांत कोलकाता से ही उच्च शिक्षा लेकर आता है. देवकांत तो कलकत्ता से पढ़कर आया है। ख्25,

श्ब्रह्मपुत्रश् में देवकांत की तरह नारायण दरोगा का बड़ा लड़का कोलकाता में पढ़ रहा था । कोलकाता की तरह गुवाहाटी भी शिक्षा का केंद्र बन गया था। नारायण दरोगा का छोटा लड़का गुवाहाटी में पढ़ रहा था. उसका बड़ा लड़का कलकत्ता में वकालत पढ़ रहा थाण्ण्ण्छोटा लड़का गोहाटी में पढ़ रहा था। दो वर्ष पहले उसे गोहाटी के कॉलिज में प्रविष्ट कराया था। ख्25,

इन उद्धरणों से पता चलता है कि स्वतंत्रता पूर्व असम में उच्च शिक्षा का प्रचार होने लगा था। हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अपनी पुस्तक श्हिंदी साहित्यरू उद्भव और विकासश् में ईसाई मिशनरियों की भारत में शिक्षा के प्रचार.प्रसार के संबंध में लिखा है. इन ईसाई मिशनरियों का प्रधान उद्देश्य ईसाई धर्म का प्रचार करना था। यह कार्य उन्होंने बड़ी लगनए तत्परता और सूझबूझ के साथ किया। उन्होंने सबसे पहले देश की जनता को समझने का प्रयत्न किया। उनके कई प्रचारक सचमुच ही महाप्राण व्यक्ति थे। उन्होंने देश

की विभिन्न भाषाओं का अध्ययन कियाए उनकी लिपियों के लिए टाइप ढलवाए देश के विभिन्न भागों में स्कूलए कॉलेजए चिकित्सालय आदि लोकोपकारी संस्थाओं की स्थापना कीए और इस प्रकार देश की जनता को अपने अनुकूल बनाने का प्रयत्न किया। ख्5,

8. दास प्रथा

श्दे दाव रे । साली को अपने जोबना का बड़ा गुमान हैए दे दाव बताता हूँ।श् इतना कहकर ही दाब ले याकूब ने बड़े जोर से छाती पर वार किया और एक ही बार में एक स्तन कटकर गिर गया। उसके कटते ही पुजारिन बेहोश हो गई। फिर भी उसने उसी तरह दूसरे झटके में उसका दूसरा स्तन भी काट लिया और बड़बड़ाया श्साली आई थी हरामी जनने। दूध पिलाएगी साली हमारी के पिल्लों को ख्6,

भारतीय समाज व्यवस्था में दास प्रथा का प्रचलन था । आधुनिक युग में इस प्रथा की विलुप्ति हुई है। श्जंगली फूलश् में दास प्रथा के संदर्भ मिलते हैं। तानी कबीले के पिंज की पत्नी युद्ध में जीती गई दासी ही थी । तानी की दूसरी पत्नी याई को विवाह के समय पिता से बहुत सी दास.दासियाँ मिली थीं । दास.दासियों का जीवन स्वामी के इच्छानुसार चलता था। दासियों ने तो तानी कबीले के पुरुषों से विवाह भी किया था। फिर भी पति का उन पर अधिकार नहीं था। वे याई की दासियाँ थीं। अतः याई का ही उन पर अधिकार था. याई की दासियाँ थीय अपने पतियों की नहीं ख्11,

जब याई तानी को त्यागकर जाने वाली होती हैए तब उसकी दास.दासियाँ भी उसी के साथ जाने को बाध्य होते हैं. याई अपने दास.दासियों और सभी सम्पत्ति को लेकर चली गई। ख्11,

भारतीय परम्परा में अतिथि को देवता माना जाता है । श्अतिथि देवो भवःश् प्रसिद्ध भारतीय उक्ति है। आधुनिक काल में शहरों में अतिथि सत्कार की परम्परा अब उसी प्रकार विद्यमान नहीं है। गाँव.देहात में अब भी अतिथि के सत्कार में अपना सारा सामर्थ्य झोंक दिया जाता है। पूर्वोत्तर भी इस मामले में पीछे नहीं है। यहाँ अपरिचित लोगों का भी अतिथि सत्कार किया जाता है। श्रूपतिल्ली की कथा में खासी समाज की अतिथि परायणता का उल्लेख मिलता है। इस उपन्यास में अंग्रेजों के समय के मेघालय का चित्रण है। इसमें राफताब के सफर के संदर्भ में उपन्यासकार ने लिखा है. गाँव के लोग बड़े भले थे। बिना नाम ठिकाना पूछे ही अच्छा से अच्छा भोजन कराते थे । जानते थे जो भी आया हैए भूखा प्यासा है। ख्9,

श्सियांग के उस पारश् में भी विक्रम और निसमी नियामदिंग तक के पैदल सफर में कई रातें अलग. अलग लोगों के घरों में गुजारते हैं। भोजन और आश्रय देकर गृहस्थ उनका सत्कार करते हैं। अतिथि सत्कार में पूर्वोत्तर के लोग किसी से पीछे नहीं हैं। श्देश भीतर देशश् में विनय की रात में गाड़ी खराब हो जाती है। वह एक असमीया घर में आश्रय ग्रहण करता है। गृहस्थ भोजन और छत देकर उसका सत्कार करता है। जब विनय सुबह पैसे देने का प्रयास करता हैए गृहस्थ पैसे लेने से इनकार कर देता हैए और विनय को असमीया गमछा भेंट करता है. वह जब चलने लगा तो उसने अधेड़ व्यक्ति को सौ.सौ के दो नोट निकालकर देने की कोशिश की। लेकिन पूरी विनम्रता के साथ उसने हाथ जोड़कर उन्हें लेने से मना कर दिया। उल्टे उसे अपने हथकरों से बना असमिया गमछाए जिसमें लाल रंग की दोनों तरफ कढ़ाई होती हैए उसे सम्मान स्वरूप भेंट किया। ख्27,

श्जहाँ बाँस फूलते हैंश् में माइकल को मारने के लिए बागी आते हैं। माइकल ङोपा गाँव के उत्सव में अतिथि के तौर पर आता है। गाँव के कुछ प्रमुख लोगों को जब बागियों के इस इरादे का पता चलता हैए तब वे कहते हैं. माइकल हमारा अतिथि है। उसकी सुरक्षा की जिम्मेदारी हमारी है। ख्9,

इस पर बागी कहते हैं कि नृत्य के दौरान नहीं मारेंगे। नृत्य बंद होते ही मार देंगे। उसके बाद मालसोमा का इशारा समझ कर गाँव वाले नाचते ही रहते है और बागियों को हार मानकर चले जाना पड़ता लगता था अगली थाप पर उँगली फट जाएगी। पर नाचना गाना कम न हुआ। बागी भी समझ गए और मालसोमा को दुश्मन मानकर चले गए। ख्9,

पूर्वोत्तर के राज्यों ने बाहरी लोगों को भी अपनाया। पर धीरे.धीरे बाहरी लोगों के प्रति यहाँ के लोगों के मन में आक्रोश भाव पनप गया है। इसका सबसे सशक्त उदाहरण 1979.1985 के बीच होने वाला असम आंदोलन है । श्आहुतिश् में दो बहिराज्य के लड़कों को मणिपुरी लड़कियों से दोस्ती बढ़ाने के कारण कुछ स्थानीय युवक पीटकर मणिपुर से बाहर चले जाने का आदेश सुना देते हैं। इस प्रसंग में जब मनोज

जिज्ञासा करता है तब नवीन शर्मा उसे बताता है. यहाँ के नवयुवकों को यह पसंद नहीं कि मनिपुर की लड़कियाँ बाहर वालों के साथ दोस्ती करेए हिले.मिले या मिले.जुले। इसके प्रति तीव्र प्रतिक्रिया होती है। ख्8,

इसके पीछे का कारण मणिपुर का इतिहास देता है। मणिपुरी इतिहास के विद्वान हेमचंद बाबू नवीन शर्मा और मनोज के सामने बाहरी लोगों के प्रति आक्रोश का कारण बताते हैं. इम्फाल पर भी जापानी बम गिरने लगे। लोग प्राणों की सुरक्षा के लिए शहर छोड़ भागने लगे। उस समय इन विदेशी सैनिकों ;अंग्रेज सैनिकोंद्ध का व्यवहार बड़ा बुरा था । इन्होंने मनिपुर के समाज में स्त्रियों के खुले व्यवहार तथा भोलेपन का और युद्ध की स्थिति का नाजायज लाभ उठाया। उन्होंने बहुत बड़ी संख्या में महिलाओं का शोषण किया। पूरे समाज ने इस आघात को विवशता के साथ देखाए पर वे भूल नहीं सके। ख्8,

9. नशाखोरी

नशाखोरी समाज के लिए एक बड़ी समस्या है। यह समाज में कई समस्याओं को जन्म देता है । नशाखोरी के कारण घरेलू हिंसा के हजारों मामले हर वर्ष सामने आते हैं। शराब पीना नशा करने का प्रमुख साधन है। पर ड्रग लेना भी नशाखोरों का प्रिय साधन है। आज पूरी दुनिया को ड्रग ने अपने कब्जे में ले लिया है। पूर्वोत्तर भारत में भी नशाखोरी की सैकड़ों घटनाएँ मिलती हैं । श्आहुतिश् में मनोज और चानु जब श्लेकविऊ रेस्ट्रॉश् में कॉफी पी रहे होते हैं तब उनको एक युवकों का दल रेस्ट्रों में ही सिरिंज के द्वारा ड्रग लेते हुए दिखते है. उनमें एक लड़का एक सिरिंज अपनी बाँहों में घोंप रहा था। उसके बाद उसने बगल वाले लड़के को सिरिंज बढ़ा दिया। उसने भी उसी तरह से सिरिंज अपनी बाँहों में लगाया। बारी. बारी से चारों ने अपनी.अपनी बाँहों में सूई ली। मनोज समझ गयाए ये ड्रग ले रहे है। ख्8,

नशाखोरी का घरेलू हिंसा से सीधा संबंध है। इसकी तरफ संकेत करते हुए चानु कहती है. यहाँ शराब तो पहले ही बहुत पीते थे अब नई पीढ़ी के लोग ड्रग लेने लगे हैं। इन सब को स्त्रियों को ही भुगतना पड़ता है। ख्8,

पूर्वोत्तर के बहुत से समाजों में शराब बनाना और पिलाना आम रिवाज है। पर वे विदेशी शराबों की तरह उतने हानिकारक नहीं होते । श्जहाँ बाँस फूलते हैं का वियाकबेला शांति के दिनों की याद में अपने को स्थानीय शराब के नशे में डुबो देता है.और शांति अब सम्भव नहीं थी और जो उसकी मारकशक्ति को कमजोर बनाते थे. पनाह पाने के लिए अपने को स्थानीय शराब में डूबो देता। ख्9,

असली भारत गाँवों में बसता है। भारत में शहर तो मुट्ठी भर हैए बाकी तो गाँव ही हैं और भारतीय सभ्यता.संस्कृति की विशेषताएँ गाँवों में ही सुरक्षित हैं। भारत को कृषि प्रधान देश कहना इसी का प्रमाण है। परंतु हमारे अधिकतर गाँव समृद्ध नहीं हैं। यहाँ शिक्षा की व्यवस्थाए साफ.सफाई की व्यवस्थाए जीवन के मानदण्ड निम्नकोटि के हैं। पूर्वोत्तर में कुछ ही शहर हैंए शेष गाँव हैं। ये गाँव अपने निवासियों को रोटीए कपड़ा और मकान देने में असमर्थ होते जा रहे हैं। यही कारण है कि लोग शहरों की तरफ भाग रहे हैं। शहरों में मेहनत.मजदूरीए छोटी.छोटी नौकरियों की सम्भावना भी अधिक है। श्मिनामश् में यामी ऐसे एक पिछड़े अरुणाचली गाँव का तस्वीर प्रस्तुत करती है । वहाँ उसे कपड़ों का अभाव दिखता है। शिक्षा के लिए बना स्कूल खण्डहर हो गया है। यामी बहुत भावुक किस्म की युवती है। गाँवों की ऐसी हालत देखकर वह बेचैन हो जाती है और इन गाँवों के लिए कुछ करना चाहती है। वह अपनी सहेली आज्ञा से कहती है. जिस गाँव में कैम्प हुआए वो बहुत पिछड़ा हुआ है। बच्चे नंगे घूम रहे थे। साफ.सफाई नाम की कोई चीज वहाँ नहीं है। जानवरों के बीच यह इतनी गंदी हालत में रह रहे हैं। कई लोग बीमर हैंए पर चिकित्सा का कोई प्रबंध नहीं है। कुत्ते और बच्चे एक साथ खा रहे थे। सरकारी प्राथमिक स्कूल की बिल्डिंग जंगल में खण्डहर सी हो गईए ऐसा लगता है कि वह काफी सालों से बंद पड़ा था।ण्ण्ण्ण् किसी भी घर में शौचालय नहीं है। ख्13,

10. उपसंहार

शोधार्थी ने पाया है कि वर्तमान में पूर्वोत्तर के आदिवासी समाज का अध्ययन. अध्यापन ज्ञान विभिन्न अनुशासनों के अंतर्गत किया जा रहा है । जिसके कारण आदिवासी जीवन.दर्शन और मूल्यबोध की अनेक

जानकारियाँ प्राप्त हो रही हैं। किंतु जहाँ तक हिन्दी भाषा और साहित्य का प्रश्न है । वहाँ पूर्वोत्तर भारत लेखकों के लिए विस्मृत.सा रहा है। इस बात को इस ढंग से कहा जा सकता है कि हिन्दी साहित्य लेखन की दृष्टि से पूर्वोत्तर भारत सदा से उपेक्षित एवं अछूता रहा है। इसके साथ यह भी सत्य है कि हिन्दी साहित्य लेखन में आदिवासी जीवन और भी अधिक अनुपस्थित रहा है। शोधकार्य करते हुए पाया गया है कि वास्तविक रूप से इक्कीसवीं सदी में पूर्वोत्तर भारत के विषय में लेखन शुरू हुआ है । इन कार्यों में आदिवासी जीवन उभर कर सामने आया है । कथा साहित्य में पूर्वोत्तर भारत की आदिवासी अस्मिता एवं अस्तित्व के प्रश्न को मुख्य रूप से उठाया गया है। इसके साथ ही पूर्वोत्तर भारत के आदिवासी समाज की मुख्य चिंता और समस्याओं को अभिव्यक्ति मिली है । आज अनेक ऐसी रचनाएँ लिखी जा रही हैं जो पूर्वोत्तर भारत के आदिवासी विमर्श को केंद्र में लाने की आधारभूमि बनी हैं । अर्थात् पूर्वोत्तर भारत के आदिवासी जीवन को स्वर दे रही हैं। जो उनके जीवन की हलचलों एवं समस्याओं को सामने ला रही हैं। जिनमें महत्वपूर्ण रूप से देवेन्द्र सत्यार्थी का श्ब्रह्मपुत्रष्ए कृष्णचन्द्र शर्मा ष्भिक्खुष् का प्रक्तयात्राश्ए श्रीप्रकाश मिश्र के ष्जहाँ बाँस फूलते हैंश्ए ष्रूपतिल्ली की कथाष् तथा श्नदी की टूट रही देह की आवाजश्ए महेंद्रनाथ दुबे का श्मुक्तिश्ए लालबहादुर वर्मा का ष्उत्तर.पूर्वश्ए श्रीधर पाण्डेय की श्आहुतिश्ए तथा जोराम यालाम नाबाम का ष्जंगली फूलष् आदि है । इसके अतिरिक्त जोराम यालाम का कहानी संग्रह श्साक्षी है पीपलश्ए जमुना बीनी का श्अयाचित अतिथि और अन्य कहानियाँश् एवं मोर्जुम लोयी का श्काबूश् आदि प्रमुख हैं। जो आदिवासी विमर्श को मजबूती प्रदान कर रही हैं।

इस अध्ययन से ज्ञात हुआ है कि पूर्वोत्तर के लोगों को शेष भारत के लोग अपने से अलग एवं भिन्न प्रजाति के मानते हैं । जबकि ऐसा नहीं है वे भी भारत के नागरिक हैं । पूर्वोत्तर के लोगों की भाषा एवं संस्कृति भले ही शेष भारत से भिन्न हैय किन्तु कहीं न कहीं वह भारत की विविधता पूर्ण संस्कृति का ही एक अंग है । अभी तक पूर्वोत्तर के लोगों की आवाज को अनसुना किया जाता रहा है। जिसके कारण कुछ लोग अपनी बात को केंद्रीय सत्ता तक पहुँचाने के लिए हिंसा के रास्ते को भी अपनाते रहे हैं। प्रारंभिक दौर में पूर्वोत्तर के लोगों का संपर्क मैदानी भाग के व्यापारी एवं सैनिक वर्ग के लोगों से हुआ। दोनों लोगों के साथ इनका अनुभव अच्छा नहीं रहा। दोनों ने इनको ठगा जिसके कारण आज ये बाहरी लोगों के साथ व्यवहार करने में अत्यधिक सतर्कता बरतते हैं। पूर्वोत्तर के लोग सीधे.साधे एवं सरल प्रकृति वाले होते हैए ये व्यापारियों की धूर्तता भरी चालों में आसानी से फँस जाते हैं। पूर्वोत्तर की पीड़ा किसी गैर समाज की पीड़ा नहीं हैए बल्कि हम सब की अपनी पीड़ा है । अतः इसका हल भी हमें ही जल्दी से जल्दी खोजना होगा। हमारे स्कूली पाठ्यक्रम में भी पूर्वोत्तर के बारे में पर्याप्त जानकारी का अभाव नजर आता है। इस कमी को दूर करने की आवश्यकता है। शिक्षा ही एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा पूर्वोत्तर तथा शेष भारत के बीच सम्बन्धों में जो दूरी है। उसको जल्दी से जल्दी कम किया जा सकता है। पूर्वोत्तर के समाज को अपने दृष्टि से न देखकर बल्कि उनकी दृष्टि से देखने की आवश्यकता है । तभी उनके जीवन के दुख एवं दर्द को महसूस किया जा सकता है।

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.

REFERENCES

Agyeya Sachchidananda Hiranand Vatsyayan Agyeya's Complete Stories Delhi: Rajpal, .D Sanj, 2017

Living with Laughter. First Edition Palasbari Assam, 1948.

Thakur, Balabhadra, Muktavati Allahabad: Hindi Bhavan, 1958.

Tiwari, Pramod Kumar Uff Second Edition. New Delhi: Bharatiya Jnanpith, 2011.

Dwivedi, Hazariprasad Hindi Literature: Origin and Development Twentieth Edition. New Delhi: Rajkamal Publications, 2020.

Dubey, Dr. Mahendra Nath Mukti First Edition New Delhi: Vani Publications, 1999.

P. Dey, Udaybhanu. Harta Kunwar's Will. First Edition. New Delhi: Bharatiya Jnanpith, 2012.

Pandey, Shridhar. Aahuti First Edition. Patna: Janaki Publications, 2008.

Mishra, Shriprakash Where the Bamboos Flower. Revised edition. Delhi: Yash Publications, 2011.

The Story of Patilli. First paperback edition. Allahabad: Lokbharati, 2019.

Yalam, Joram. Wild Flowers. First reprint. Delhi: Anujna Books, 2019.

Sakshi Hai Peepal. First edition. Delhi: Anujna Books, 2019.

Loyi, Morjum. Minam. First edition. Jaipur: Bodhi Publications, 2020.

Varma, Dayaram. Siang Ke Us Paar. First edition. Chennai: Nason Press, 2018.

Varma, Navarun. Jai Ai Assam. First edition. Allahabad: Smriti Prakashan, 1983.

Vaishya, Ritamani. "Aastha." Snehil Patrika Fourth Year, 2019.

"One Day Diary." Dainik Purvodaya. Waves Letter, 2018.

"Patanga." Sahitya Yatra Magazine Issue 11, Year 3.

"Banjaran" Vishwa Hindi Magazine, 2019.

"Mirage." Human Rights: New Direction, Magazine Issue 14, 2017.

"Loktak Kab Tak!" Sahitya Yatra Magazine Issue 16, 2018.

"Sukoon." Daily Purvoday. Waves Letter, 2018.

"Harkant's Wife." Daily Purvoday. Waves Letter, 2018.

Shambhunath. Hindi Novel: Nation and Margin. First Edition. New Delhi: Vani Prakashan, 2016.

Satyarthi, Devendra Brahmaputra. New Delhi: Shia Prakashan, 1956.

Sabarwal, Anita. Lohit. First Edition. Delhi: Parmeshwari Prakashan, 2016.

Saurabh, Pradeep. Country Within Country. Second Edition. New Delhi: Vani Prakashan, 2013.

Jain, Chhaganlal. Rah and Rohe. Eleventh time Guwahati: Assam Rashtrabhasha Prachar Samiti, 2007.